प्रयोगशील नाटककार : मणि मधुकर

		पृष्ठांक
अध्याय : 1	विषय-प्रवेश	1 - 33
अध्याय : 2	मणि मधुकर के नाटकों में असंगत-नाट्य-शैली प्रयोग	34 - 78
अध्याय : 3	मणि मधुकर के नाटकों में लोक-नाट्य-शैली प्रयोग	79 - 119
अध्याय : 4	मणि मधुकर के नाटकों में शिल्पगत प्रयोग	120 - 173
अध्याय : 5	मणि मधुकर के नाटकों में रंगमंचीय प्रयोग	174 - 217
अध्याय : 6	समन्वित मूल्यांकन	218 - 222

प्रयोगशील नाटककार : मणि मधुकर

अ नु क्र म णि का

पृष्ठांक

अध्याय : 1 विषय-प्रवेश 1 - 33

भूमिका

1· प्रयोग : अर्थबोध, अर्थविस्तार

2· प्रयोग की आवश्यकता

3· प्रयोग का स्वरूप

अ· प्रयोग की प्रकृति, आ· प्रयोग और प्रयोगधर्मिता,

इ· परंपरा और प्रयोग, ई· समाजगत प्रयोग

4· साहित्य में प्रयोग

अ·संस्कृत नाटक में प्रयोग,

आ·पाश्चात्य नाटक में प्रयोग

इ·स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक में प्रयोग :-

·1·असंगत नाट्य-प्रयोग, ·2·लोक-नाट्य प्रयोग

·3·शिल्पगत प्रयोग -

प· वस्तुगत प्रयोग -

क·मिथकीय प्रयोग, ख·कथावस्तुगत

प्रयोग, ग·-हासोन्मुख कथानक

फ· पात्र-परिकल्पनात्मक प्रयोग

ब· भाषागत प्रयोग

भ· प्रतीक प्रयोग

म· शीर्षक संरचना

य· मंचीय प्रयोग

5· मणि मधुकर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

6· जीवनवृत्त

7· मान-सम्मान

8· कृतित्व

9· बहुविध साहित्यकार

अ· कवि के रूप में, आ· कहानीकार के रूप में

इ· उपन्यासकार के रूप में, ई·नाटककार के रूप में

10· नाटक संबंधी मणि मधुकर की धारणा

अ· हिन्दी नाटक संबंधी,

आ· अन्य भाषाओं के नाटक संबंधी

11· मणि मधुकर के नाटकों की अवधारणा

·1·रसगंधर्व, ·2·दुलारीबाई, ·3·बुलबुल सराय,

·4·इकतारे की आँख, ·5·खेला पोलमपुर,

·6·बोलो बोधिवृक्ष

12· शोध-कार्य के अध्ययन की दिशाएँ

पृष्ठांक

अध्याय : 2 मणि मधुकर के नाटकों में असंगत-नाट्य-शैली प्रयोग 34 - 78

भूमिका

1· असंगत और विसंगत शब्द-प्रयोग

2· असंगत नाटक : परिभाषा और स्वरूप

3· हिन्दी के असंगत नाटककार और उनके नाटक

4· मणि मधुकर के असंगत नाटक

5· विसंगत जीवन-बोध के विविध रूप -

क· रक्षक ही भक्षक है

ख· मनुष्य पशु बन रहा है

ग· नैतिकता के नये प्रतिमान -

अ·विवाह मूल्यों में विघटन, आ·पारिवारिक संबंधों में विघटन, इ·समाज जीवन और मूल्य-विघटन, ई·राजनीति और मूल्य-विघटन

घ· व्यंग्य-बोध के विविध आयाम -

अ·आम आदमी की स्थिति, आ·अफसर, इ·सरकारी कर्मचारी, ई·आधुनिक शिक्षा, बौद्धिक नपुंसकता, उदासीनता और दिशाहीनता, उ·वर्तमान जीवन संदर्भ, ऊ·नाटककार, निर्देशक, दर्शक और आलोचक, ए·व्यंग्य के अन्य आयाम

निष्कर्ष

अध्याय : 3 मणि मधुकर के नाटकों में लोक-नाट्य-शैली प्रयोग 79 - 119

भूमिका

1· लोक-नाट्य : शब्द-प्रयोग और परिभाषा

2· लोक-नाट्य की विशेषताएँ

पृष्ठांक

3· लोक-नाट्य के प्रकार

4· हिन्दी में लोक-नाट्य परम्परा और मणि मधुकर

क· लोक-कथाओं का प्रयोग -

अ·गंधर्वों की कहानी, आ·पुश्तैनी जूतों की कहानी, इ·सोने के लालच की कहानी, ई·पुतलों की कहानी, उ·न्यायाधीश और चोर की कहानी, ऊ·सुखी व्यक्ति के कुरते की कहानी, ए·कबीर की जीवन कहानी, ऐ·सुजाता की खीर की कहानी

ख· लोक-जीवन अभिव्यक्ति प्रयोग -

अ·शादी बच्चे और औरत, आ·पंचायत न्याय - व्यवस्था, इ·नारी शोषण, ई·कर्जदारी, उ·अंधश्रद्धा, ऊ·गाँव की समस्याएँ, ए·स्त्री लंपट साधु और जोगी, ऐ·कोतवाल का अजब न्याय, ओ·चापलूसी, औ·काशी निवासी, अं·मुल्ला का करिश्मा, अः·धर्म के नाम पर बक-बक

ग· लोक-गीत प्रणाली प्रयोग -

अ·मंगलाचरण का विडम्बनात्मक प्रयोग, आ·शेर-शायरी प्रयोग, इ·पात्रों के चरित्र-चित्रण के लिए प्रयोग, ई·कबीर की विचारधारा के लिए प्रयोग, उ·रामधनिया का प्रयोग

निष्कर्ष

पृष्ठांक

अध्याय : 4 मणि मधुकर के नाटकों में शिल्पगत प्रयोग 120 - 173

भूमिका

1· वस्तुविन्यस्त प्रयोग -

अ·मिथकीय प्रयोग, आ·विषयगत प्रयोग,

इ·नाट्य-समीक्षा प्रयोग, ई·कथ्यहीनतामूलक प्रयोग

2· चरित्र-सृष्टि के विविध प्रयोग -

अ·पात्रों की संख्या, आ·पात्रों का नामकरण -

·1·समष्टि या वर्गगत नाम प्रयोग

·2·वर्णमालाक्षर प्रयोग

·3·विलक्षण नाम प्रयोग

इ·लघु मानव अंकन, ई·आधुनिक युगबोध से

सम्पृक्त पात्र, उ·चरित्र-चित्रण की विधियाँ -

1·मंगलाचरण द्वारा पात्रों की चरित्र-चित्रण विधि

2·अनुपस्थित पात्रों की चरित्र-चित्रण विधि

3·पात्रों के चरित्र-चित्रण की मनोवैज्ञानिक विधि

4·पात्रों के चरित्र-चित्रण में स्वप्न विधि

5·आत्मनिवेदन द्वारा पात्रों की चरित्र-चित्रण विधि

3· भाषा-शिल्पगत प्रयोग

अ·पात्रानुकूल भाषाशैली, आ·काव्यात्मक भाषाशैली,

इ·पुनरूक्त भाषाशैली, ई·पूर्वदीप्ति भाषाशैली,

उ·प्रश्नार्थक भाषाशैली, ऊ·चित्रात्मक भाषाशैली,

क·अदालती भाषाशैली, ख·अनुप्रासयुक्त भाषाशैली,

ग·प्रतीकात्मक भाषाशैली, घ·विडम्बनात्मक भाषाशैली,

च·हास्य शैली का सहज प्रयोग, छ·सूक्तियाँ -

1·मनगढ़न्त सूक्तियाँ, 2·प्रचलित सूक्तियाँ

पृष्ठांक

4· संवाद-शिल्पगत प्रयोग

अ·स्वगत कथन परक प्रयोग, आ·खण्डित संवाद,
इ·अदालती संवाद, ई·निरर्थक संवाद,
उ·असम्बद्ध संवाद, ऊ·संवाद में संवाद
ए·गली-गलौचयुक्त संवाद

5· शब्द-शिल्पगत प्रयोग

अ·तत्सम शब्द प्रयोग, आ·अर्धतत्सम/अर्धतद्भव
शब्द प्रयोग, इ·देशज शब्द प्रयोग, ई·राजस्थानी
शब्द प्रयोग, उ·अरबी शब्द प्रयोग, ऊ·फारसी
शब्द प्रयोग, क·अंग्रेजी शब्द प्रयोग,
ख·अनुरणनात्मक शब्द प्रयोग, ग·द्वित्वव्यंजक शब्द
प्रयोग, घ·ध्वनिसादृश्यमूलक शब्द प्रयोग,
च·अश्लील शब्द प्रयोग, छ·मुहावरों और कहावतों
का प्रयोग - ·1·मुहावरे, ·2·कहावते

6· प्रतीक प्रयोग

अ· व्यक्ति और संज्ञावाचक प्रतीक, आ·वस्तुवाचक
प्रतीक, इ·प्राकृतिक प्रतीक, ई·ऐंद्रिय प्रतीक,
उ·पक्षी प्रतीक

7· शीर्षकों के अभिनव प्रयोग

अ· रसगंधर्व, आ· दुलारीबाई, इ· बुलबुल सराय,
ई·इकतारे की आँख, उ· बोलो बोधिवृक्ष

निष्कर्ष

अध्याय : 5 मणि मधुकर के नाटकों के रंगमंचीय प्रयोग 174 - 217

भूमिका

1· दृश्यबंधगत प्रयोग

पृष्ठांक

2· अभिनय संबंधी प्रयोग

अ· व्यक्ति-समाज-बोध परक विशिष्ट प्रयोग -

1·दुलारीबाई की कंजूसी, 2·अफसर का मार्मिक न्याय, 3·कामचोर कैदी, 4·कबीर की मुक्ति की माँग

आ· मंगलाचरण के विडम्बनात्मक प्रयोग

इ· शपथ-ग्रहण समारोह का परिहास परक प्रयोग

ई· श्रद्धांजली का अभिनव प्रयोग

उ· वेशान्तर के अभिनव प्रयोग

ऊ· कथा-गायन का प्रयोग

क· नृत्य-गान के विशिष्ट प्रयोग

ख· ढोलक नृत्य-गान प्रयोग

ग·हास्य-रस-व्यंग्य प्रयोग

घ· मुद्राभिनय के प्रयोग

च· अंधकार का पात्र के लिए प्रयोग

छ· एक पात्र - अनेक भूमिकाएँ : विशिष्ट प्रयोग

3· प्रकाश-योजना के अभिनव प्रयोग

4· ध्वनि एवं संगीत के औचित्यपूर्ण प्रयोग

5· रंगमंचीय प्रस्तुति और दर्शकीय-पाठकीय संवेदनाएँ

निष्कर्ष

अध्याय : 6 समन्वित मूल्यांकन 218 - 222

संदर्भ ग्रंथ सूची 223 - 227